# पाठ 11. उपहार

## पाठ का परिचय

शेरोजा को अपने जन्मदिन पर ढेरों उपहार मिले। उन उपहारों में उसके चाचा जी के द्वारा दिया गया एक पिंजरा भी था। शेरोजा उस पिंजरे को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी माँ को पिंजरा दिखाते हुए कहा कि वह इस पिंजरे में सुंदर-सुंदर चिड़ियों को फँसाकर रखेगा। शेरोजा ने अपने चाचा जी के सुझाए गए उपायों के अनुसार आँगन में पिंजरा रखकर उसमें दाने बिखेर दिए। उसे भूख लगी थी, अत: पिंजरे को छोड़ वह खाना खाने चला गया। वापस आने पर उसने उसमें एक नन्ही-सी चिड़िया देखी। वह पिंजरे को घर के अंदर ले आया। माँ ने चिड़िया को देख उसे छोड़ने का आग्रह किया, लेकिन शेरोजा न माना। दो दिन शेरोजा ने बड़ी दिलचस्पी से चिड़िया की देखभाल की। तीसरे दिन पिंजरे को गंदा देख माँ ने उसे चिड़िया को आज़ाद करने को कहा, लेकिन शेरोजा नहीं माना। अगले दिन सुबह शेरोजा ने देखा कि चिड़िया की साँसें तेज़-तेज़ चल रही हैं। उसे देखकर शेरोजा समझ गया था कि चिड़िया को कुछ हो गया है। जब माँ ने देखा तो उन्हें बहुत बुरा लगा, लेकिन अब तो जो होना था, सो हो गया था। सारा दिन शेरोजा परेशान रहा और रात होते-होते वह चिड़िया मर गई। यह शेरोजा के लिए एक बड़ा सदमा था। कई दिनों तक उसे रातों को नींद नहीं आई और सपने में आज़ादी के लिए फड़फड़ाती और संघर्ष करती हुई चिड़िया दिखाई देती। इससे शेरोजा को एक सबक मिल गया कि आज़ादी हर जीव को प्यारी होती है।

## पाठ में निहित जीवन-मूल्य

कभी किसी जीव को न सताओ। उसे कैद न करो। अपने मनोरंजन के लिए पशु-पक्षियों को पीड़ा नहीं देनी चाहिए।

## पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पाठ का कक्षा में वाचन करें। पाठ में आई महत्वपूर्ण पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। उनके उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। संवादों को उचित उतार-चढ़ाव के साथ बोलना सिखाएँ।

## महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करें –

- ईश्वर ने पशु-पक्षी क्यों बनाए?
- क्या हमें पक्षियों को कैद करना चाहिए?
- पक्षी हमारे किस काम आते हैं?
- पक्षियों को संरक्षण देने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
- अपने प्रिय पशु या पक्षी का नाम बताओ।